VOLUME – VIII, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

३. मुरादाबाद जनपद की कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता का तुलनात्मक अध्ययन

बिन्दू सिंह
शोधार्थिनी, शिक्षा शास्त्र, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश ।

सारांश

आज सम्पूर्ण विश्व नयें समाज की रचना में कृत संकल्प है। पुराने रीति–रिवाजों, कुप्रथाओं, अन्धविश्वासों के उन्मूलन के लिए प्रयत्नशील है। समाज में व्याप्त जातिगत संकीर्णता भेदभाव को मिटाना चाहता है। शिक्षा की इस नवीनीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा ही असमानता को समानता में तथा परतंत्रता को स्वतंत्रता में परिवर्तित कर सकती है।पिछले कुछ दशकों में नारी सम्बन्धी अध्ययन व महिला उत्थान विषयक विचारधाराओं ने बौद्धिक जगत में एक केन्द्रीय व महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात न केवल जीवन शैली व मूल्यों में परिवर्तन आये अपितु सामाजिक संरचना में भी व्यापक परिवर्तन उभरकर प्रस्तुत हुए हैं। नये व्यवसायों के प्रादुर्भावों से सामाजिक गतिशीलता को एक आधार मिला व आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में व्यक्ति की स्वतंत्रता व सामाजिक समानता को संस्थागत माध्यमों से क्रियान्वित किया गया।उच्च शैक्षिक प्राप्त कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता में सार्थक अन्तर नहीं होता है। निम्न शिक्षा प्राप्त कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता में सार्थक अन्तर नहीं होता है। कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

आजादी के बाद भारतीय संविधान बना जो किसी एक राजनीतिक विचारधारा का प्रतीक न होकर विभिन्न विचारधाराओं का अदभुत सम्मिश्रण है और इसमें स्त्रियों को भी राष्ट्र जीवन में प्रगति का आधार बनाया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ के पूर्व महासचिव कोफी अन्नान ने भी समेकित विकास और राष्ट्र के निर्माण में स्त्रियों व पुरूषों की स्वतन्त्रता और समानता को महत्वपूर्ण माना है। इसी उददेश्य से भारत जैसे परम्परागत रूढ़िवादी समाज को जागरूक व विकासोन्मुख बनाने के लिए शिक्षा विशेषकर स्त्री शिक्षा को राष्ट्रीय विकास का एक निवेश माना गया।

आज सम्पूर्ण विश्व नयें समाज की रचना में कृत संकल्प है। पुराने रीति–रिवाजों, कुप्रथाओं, अन्धविश्वासों के उन्मूलन के लिए प्रयत्नशील है। समाज में व्याप्त जातिगत संकीर्णता भेदभाव को मिटाना चाहता है। शिक्षा की इस नवीनीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा ही असमानता को समानता में तथा परतंत्रता को स्वतंत्रता में परिवर्तित कर सकती है।

२. आवश्यकता एवं महत्व

प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा बालक व बालिका के सामाजीकरण के अन्तर की अनादिकाल से चली आ रही प्रक्रिया को समाप्त किया जा सकता है। सम्पूर्ण राष्ट्रीय आय का एक बड़ा भाग केन्द्र व राज्य

सरकार द्वारा शिक्षा पर व्यय किया जाता है। इस व्यय की सार्थकता के मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत शोध सहायक है। नारी शिक्षा का समुचित उपयोग किया जा सक़ता है। शिक्षा जगत में शिक्षाविदों को सहायता प्रदान कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन सरकार को महिला शिक्षा, महिला आरक्षण व रोजगार के समान अवसर प्रदान करने के सन्दर्भ में सहायता प्रदान करता है। शिक्षा के स्तर का सामाजिक स्वतंत्रता में क्या योगदान है। इससे समाज सुधारक लाभान्वित हो सकेंगे।

३. समस्या कथन

"मुरादाबाद जनपद की कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध विधिः—वर्तमान शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरणः—सामाजिक स्वतंत्रता मूल्य मापनी—डा० एल०आई० भूषण

न्यादर्शः— वर्तमान शोध हेतु महाविद्यालय स्तर के ५०कामकाजी और ५० गैर कामकाजी महिलाओं को लिया गया है।

षोध के उद्देश्य

- उच्च शैक्षिक प्राप्त कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता का अध्ययन करना।
- निम्न शिक्षा प्राप्त कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता का अध्ययन करना।
- कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता का अध्ययन करना।
- गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता का अध्ययन करना।

शोध की मुख्य परिकल्पनाएं

- उच्च शैक्षिक प्राप्त कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- निम्न शिक्षा प्राप्त कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका— १

शैक्षिक योग्यतानुसार कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—मूल्य का विश्लेषण एवं व्याख्या

शैक्षिक योग्यता	सख्या	मध्यमान	प्रमाणित विचलन	टी परीक्षण	सार्थकता स्तर
उच्च शैक्षिक योग्यता	२५	१७.५०	२.१४	०.९३	असार्थक
निम्न शैक्षिक योग्यता	२५	१७.०६	१.६१		

तालिका १ से स्पष्ट है कि उच्च शैक्षिक योग्यता प्राप्त कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता का मध्यमान (१७.५) है तथा निम्न शिक्षा प्राप्त कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता का मध्यमान (१७.०६) है। दोनों समूहों का मध्यमान लगभग समान है जो स्पष्ट करता है कि शैक्षिक योग्यता चाहे उच्च हो या निम्न, महिलाओं द्वारा बाहर कार्य किये जाने का प्रभाव उनकी सामाजिक स्वतंत्रता मांग पर पड़ता है। ''टी परीक्षण'' का मान (०.९३) है जो कि .०५ सार्थकता स्तर पर भी सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि इण्टरमीडिएट व स्नातकोत्तर स्तर की कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता मांग लगभग समान होती है।

तालिका– २

शैक्षिक योग्यतानुसार गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्य का विश्लेषण एवं व्याख्या

शैक्षिक योग्यता	सख्या	मध्यमान	प्रमाणित विचलन	टी परीक्षण	सार्थकता स्तर
उच्च शैक्षिक योग्यता	२५	१६.१३	२.२८	४.५०	.०१
निम्न शैक्षिक योग्यता	२५	१२.८८	२.५५		

तालिका २ से स्पष्ट है कि उच्च शैक्षिक योग्यता प्राप्त गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता का मध्यमान (१६.१३) है तथा निम्न शिक्षा प्राप्त गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता का (१२.२८) है। जबकि विचलनशीलता मान उच्च शैक्षिक योग्यता प्राप्त गैर कामकाजी महिलाओं का (२.८८) तथा निम्न शिक्षा प्राप्त गैर कामकाजी महिलाओं का (२.५५) ''टी परीक्षण'' का मान (४.५०) है जो कि .०१ सार्थकता स्तर पर भी सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है। जो यह स्पष्ट करता है। कि उच्च शिक्षा प्राप्त गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता मांग निम्न शिक्षा प्राप्त महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता मांग से अधिक है। दोनों समूह के मध्यमानों में अन्तर स्पष्ट करता है कि शैक्षिक योग्यता का प्रभाव सामाजिक स्वतन्त्रता पर पड़ता है अर्थात सभी महिलाओं के गैर कामकाजी होने पर भी शैक्षिक योग्यता में भिन्नता सामाजिक स्वतंत्रताको प्रभावित करती है। शैक्षिक योग्यता में भिन्नता सामाजिक स्वतंत्रता को प्रभावित करती है। शैक्षिक स्तर उच्च होने पर व्यक्ति समाज में व्याप्त कुरीतियों, परम्पराओं तथा अनावश्यक नियंत्रण को हटाकर विवेकपूर्ण जीवन जीने की कला सीखता है।

तालिका–३

उच्च शिक्षा प्राप्त कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्य का विश्लेषण एवं व्याख्या

शैक्षिक योग्यता	सख्या	मध्यमान	प्रमाणित विचलन	टी परीक्षण	सार्थकता स्तर
उच्च शैक्षिक योग्यता	२५	१७.५	२.१४	२.४४	.०५
निम्न शैक्षिक योग्यता	२५	१६.१३	२.२८		

तालिका ३ से स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा प्राप्त कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता का मध्यमान (१७.५) तथा उच्च शिक्षा प्राप्त गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता का मध्यमान (१६.१३) है जो कि लगभग समान है। जिसका कारण महिलाओं द्वारा प्राप्त की गयी एक समान शैक्षिक योग्यता है। विचलनशीलता मान उच्च शिक्षा प्राप्त कामाकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता का (२.१४) तथा गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता का (२.२८) है। टी परीक्षण का मान (२.४४) है जो कि ०.०५ सार्थकता पर, सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है। इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा प्राप्त कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता की मांग उच्च शिक्षा प्राप्त गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता मांग से अधिक होती है। हमारे दैनिक जीवन के अनुभव इस बात की पुष्टि करते हैं कि उच्च शैक्षिक योग्यता प्राप्त महिलाओं में चिन्तन, मनन, निर्णय की क्षमता, परिस्थितियों को समझने की क्षमता अधिक है। उच्च शिक्षा प्राप्त कामकाजी महिलाओं के दृष्टिकोण विस्तृत हो जाने पर अत्याधिक समायोजन प्राचीन परम्पराओं का विरोध व स्वाधिकारी के प्रति सचेतना आदि उत्पन्न होने लगती है, जब कि उच्च शिक्षा प्राप्त गैर कामकाजी महिलाएं अपेक्षाकृत संकुचित दृष्टिकोण की पायी गयी।

तालिका—४

निम्न शैक्षिक योग्यता प्राप्त कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—मूल्य का विश्लेषण एवं व्याख्या

शैक्षिक योग्यता	सख्या	मध्यमान	प्रमाणित विचलन	टी परीक्षण	सार्थकता स्तर
उच्च शैक्षिक योग्यता	२५	१७.०६	१.६१	७.९८	.०१
निम्न शैक्षिक योग्यता	२५	१२.८३	२.५५		

तालिका ४ से स्पष्ट होता है कि निम्न शैक्षिक योग्यता प्राप्त कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता का मध्यमान क्रमशः (१७.०६) तथा गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता का मध्यमान (१२.८३) है। इसी प्रकार विचलनशील मान क्रमशः (१.६१) तथा (२.५५) है। टी परीक्षण मान (७.९८) है जो कि .०१ सार्थकता स्तर पर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है। जो स्पष्ट करता है कि निम्न शिक्षा प्राप्त कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता मांग निम्न शिक्षा प्राप्त गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता की मांग से अधिक होती है। इससे स्पष्ट है कि शिक्षा के साथ—साथ घर से बाहर कार्य करना व न करना सामाजिक स्वतन्त्रता को अधिक प्रभावित करता है। निम्न शिक्षा प्राप्त कामकाजी महिलाएं अधिक सामाजिक स्वतन्त्रता को दर्शाती हैं व निम्न शिक्षा प्राप्त गैर कामकाजी महिलायें कम सामाजिक स्वतन्त्रता को दर्शाती है। देखा भी गया है कि समान शैक्षिक स्तर होने पर भी वे महिलाओं जो घर में रहती हैं वे दबावपूर्ण व तनावपूर्ण जीवन व्यतीत करती है।

शोध के निष्कर्ष

- उच्च शैक्षिक प्राप्त कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता में सार्थक अन्तर पाया गया।

- निम्न शिक्षा प्राप्त कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता में सार्थक अन्तर पाया गया।
- कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता में सार्थक अन्तर पाया गया।
- गैर कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- भारतीय जनगंणना (२००१) : केन्द्रिय सांख्यिकीय संगठन, कोलकाता।
- गुप्ता एस० पी० और अलका (२००८) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, पारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- लाल, रमन बिहारी (२००४) : शिक्षा के दार्षनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त रस्तौगी पब्लिकेशन, मेरठ।
- पाठक, पी० डी० (२००६—०७) : भारतीय शिक्षा और समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- पाण्डेय रामशकल (२००६—०७) : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- पाण्डेय, के० पी०, (२००३) : शैक्षिक अनुसंधान की रूपरेखा, अमित प्रकाशन, मेरठ।
- सिहँ, अरूण कुमार (२००६) : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
- तरूण हरिवंश (२०००) : भारतीय शिक्षा तथा विपव की शिक्षा प्रणालियाँ, नई दिल्ली।
- ढौंढ़ियाल, एस० एन० एवं पाठक, ए० वी०(२००३) : पैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- गैरिट, हैनरी ई० एवं बुडवर्थ आर० (२००७) शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकीय के सांख्यिकीय प्रयोग, कल्याणी पब्लिपर्स लुधियाना पेज — २४७।